जगदीश नारायण चौबे

जगदीश नारायण चौबे का जन्म 1939 ई० में मोर, पटना (बिहार) में हुआ । इनके पिता का नाम पंडित अरिमर्दन चौबे एवं माता का नाम श्रीमती देवपति देवी था । इनकी शिक्षा-दीक्षा गाँव और पटना में हुई। पटना विश्वविद्यालय से इन्होंने हिंदी में एम० ए० और डी० लिट० किया और पटना विश्वविद्यालय में ही अध्यापक बने । 1951 ई० में इनकी पहली कविता 'राष्ट्रवाणी' में प्रकाशित हुई । 1953 ई० में इनका पहला कविता संग्रह 'एकाकी' प्रकाशित हुआ । इसकी भूमिका शिवपूजन सहाय ने लिखी । इनकी दूसरी कविता पुस्तक 'गीतकार' की भूमिका राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' ने लिखी और एक संभावनाशील कवि के रूप में पहचाना । 1962 ई० में इन्हें बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् का 'उदीयमान साहित्यकार पुरस्कार' और परिषद् से ही 2004 में 'साहित्यकार सम्मान' प्राप्त हुआ ।

1983 ई० में बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् से 'उपन्यास की भाषा' नामक पुस्तक प्रकाशित हुई जो इनके शोध का विषय भी था । इनके दो व्यंग्य संग्रह भी प्रकाशित हो चुके हैं – 'तारीफ के पुल' और 'देखो जग बौराना' । इन्होंने बच्चों के लिए अनेक कविताएँ और कहानियाँ लिखी हैं । 'दादी का कंबल', 'पिंड छूट गया', 'पीपल वाला भूत', 'दादाजी', 'गिरोह वाले बाबा' आदि बालकथाएँ हैं । 'इन्द्रधनुष कैसे बनता है', 'अच्छे बच्चे', 'हँसते-गाते गिनती सीखो' आदि बालकविताएँ खूब चर्चित हुईं । पटना विश्वविद्यालय का गान 'गंगा तट पर ज्ञान हिमालय' इनके द्वारा ही रचा गया है ।

हिंदी जगत् में जगदीश नारायण चौबे की पहचान एक सधे हुए गद्यकार की है । प्रसिद्ध कवि नागार्जुन ने इनके गद्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की है । प्रस्तुत पाठ 'निबंध' में भी उनके काटदार गद्य के नमूने भरे पड़े हैं । यहाँ संकलित पाठ एक सारग्राही अनुभवसमृद्ध शिक्षक साहित्यकार की सोद्देश्य रचना है जिसमें लालित्य और प्रयोजन दोनों के ही गुण पर्याप्त हैं । यह पाठ छात्रों में निबंध लिखने का हुनर तो विकसित करेगा ही, साथ ही उनकी रचनात्मकता के विकास में भी सहायक होगा ।

निबंध

निबंध-लेखन अथवा निबंध-लेखन के लिए पाठ तैयार करने की दिशा में कई बातें विचारणीय हैं । निबंध-लेखन का सही ज्ञान नहीं होने के कारण छात्र परीक्षा के दिनों में संभावित प्रश्नों के लिए शिक्षक-ज्योतिषियों की तलाश में भटकते रहते हैं । ऐसा आत्मविश्वास की कमी के कारण तथा निबंध संबंधी प्रचारित धारणाओं की वजह से होता है । पाठलेखक को स्पष्ट बता देना चाहिए कि संसार में जितनी वस्तुएँ हैं, सभी निबंध का विषय बन सकती हैं और ऐसी स्थिति में आगामी प्रश्नों की कोई संभावना घोषित नहीं की जा सकती । भ्रांत और निर्मूल धारणाओं को भी दूर करने का प्रयत्न किया जाना चाहिए, क्योंकि अबतक हिंदी निबंध पर छात्रलेखकों द्वारा इतना अत्याचार किया गया है, जितना और किसी लेखन पर नहीं । परिणामस्वरूप परीक्षकपाठक ऐसे निबंधों को न तो आद्योपांत पढ़ पाते हैं और न छात्रलेखकों को अच्छे अंक ही मिल पाते हैं। निबंध लिखने के समय यदि पढ़ने वाले का ध्यान रखा जाए तो बहुत सारी गड़बड़ियाँ दूर हो सकती हैं । इतनी सतर्कता और जागरूकता आ जाएगी कि अत्याचार करने की हिम्मत ही नहीं होगी । चूँकि बोलने और लिखने के समय सुननेवाले और पढ़नेवाले का ख्याल तो हम रखते ही हैं । क्यों न हम निबंध लिखने के समय उस अज्ञात परीक्षकपाठक को ध्यान में रखें । बहुत कुछ के साथ वह एक आदमी भी है और उसे भी हमारी तरह अच्छी चीजें अच्छी और बुरी चीजें बुरी लगती होंगी । पिछले तेईस वर्षों से मैं छात्रों से पूछता आ रहा हूँ कि क्या वे उत्तर लिखने के समय परीक्षक का, जो पाठक है, ध्यान रखते हैं ? उत्तर में नहीं ही सुनता हूँ । फिर पाठक और लेखक के बीच सेतु कैसे बनेगा ? सबसे बड़ी भ्रांत धारणा पृष्ठसंख्या को लेकर है । पाठलेखक इस निराधार प्रचार को निर्मूल करें । निबंध की कोई निर्धारित या निश्चित पृष्ठसंख्या नहीं है । सच तो यह है कि निबंध के कलेवर बढ़ने के साथ-साथ उसका नाम भी बदल जाता है, जैसे प्रबंध, महानिबंध, शोध-प्रबंध, शोध-निबंध आदि । निबंध विचारों की सुनियोजित अभिव्यक्ति है, इसलिए उसमें कसाव होगा, ढीलापन नहीं । आकस्मिक, लेकिन निरंतर प्रवाह निबंध के लिए अनिवार्य है । फ्रैंसिस बेकन अथवा आचार्य शुक्ल के निबंध इसके प्रमाण हैं । छात्रों के निबंध प्रायः अनंत पृष्ठों के होते हैं, कुछ अज्ञानतावश और कुछ स्पर्द्धावश । अज्ञानतावश, इसलिए कि वे यह मानते ही नहीं कि निबंध दस पृष्ठों से भी कम का हो सकता है और स्पर्द्धावश इसलिए कि अमुक ने कागज लिया तो मैं क्यों न लूँ ? अगर बातों को सुरुचिपूर्ण ढंग से कहने की कला आती हो तो निबंध अनेक पृष्ठों का भी हो सकता है और उसे पढ़ने में पाठक को आनंद भी आएगा तथा छात्रों को

अंक भी बढ़िया मिलेंगे, लेकिन ऐसा होता बहुत कम है और यह बात मैं पिछले अनुभवों के आधार पर कह रहा हूँ । निबंध पर जिस अत्याचार की बात मैं पहले कर चुका हूँ, वह कई तरफ से होता है; विषय-प्रतिपादन के साथ, विचारों के पल्लवन के साथ, भाषा और शैली के साथ; जिसका नतीजा यह होता है कि हिंदी निबंध नीरस, बोझिल और उबाऊ हो जाता है ।

पाठलेखक को यह भी बताना होगा कि निबंध, खासकर हिंदी निबंध न तो कहीं की ईंट और कहीं के रोड़े से निर्मित होता है और न भानुमती का पिटारा ही है । जानते हैं ? हिंदी निबंध में सब कुछ रहता है । क्या नहीं रहता ? भूगोल, इतिहास, फिजिक्स, केमिस्ट्री यानी वह सब कुछ, जो हम पढ़ या जान चुके होते हैं और उनका अन्यत्र इस्तेमाल करने से अबतक डरते रहे हैं । हिंदी निबंध में सभी उलजलूल, ऊटपटांग बातों की खपत हो जाती है, मानो हिंदी निबंध लेखन का दिन इनके उद्धार का दिन हो ! इतना ही नहीं, हिंदी निबंध में अंग्रेजी का उद्धरण हम जरूर देंगे, भले ही वे अशुद्ध ही क्यों न हों । ऐसा शायद अंग्रेजी का रोब गालिब करने अथवा उसके वर्तमान वर्चस्व को अमिट-अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए किया जाता है । मैं उद्धरणों के विरुद्ध नहीं हूँ । अपनी बात की पुष्टि अथवा दूसरे की बात का खंडन करने के लिए निबंध में उद्धरण आवश्यक होते हैं । हिंदीतर भाषाओं का उद्धरण जब भी दें, इस बात का ध्यान रखें कि उसका हिंदी अनुवाद पहले दे दें, और बाद में टिप्पणी में मूल पंक्तियों का कम-से-कम लेखक के नाम के साथ, हवाला अवश्य दे दें । ऐसा जो नहीं करते, वे उद्धरण को सजावट या अलंकरण का सस्ता मजाकिया साधन मानते हैं और ऐसी हालत में वह उद्धरण पाण्डित्य का द्योतक न बनकर, बेवकूफी का उद्घोषक बन जाता है ।

हिंदी निबंध की दुर्दशा का एक कारण यह भी है कि छात्र उसे रबर समझकर मनमानी खींचतान करते हैं, जिससे एक पृष्ठवाला निबंध कम-से-कम दो-तीन पृष्ठों तक खिंच ही जाता है । 'भारत एक कृषि प्रधान देश है । भारत एक धर्म प्रधान देश है' आदि अनेक ऐसे आर्ष वाक्य हैं, जिनका सदियों से हिंदी-निबंधों में प्रयोग हो रहा है और, तब 'अतएव अर्थात् शैली' के द्वारा इन वाक्यों को लमारकर पूरे पृष्ठ को भद्दे तरीके से भर दिया जाता है, जैसे "भारत एक कृषि प्रधान देश है । अर्थात् भारत में कृषि की प्रधानता है । तात्पर्य यह कि भारत में कृषक रहते हैं। कहने का मतलब यह है कि भारत के अधिकांश लोग कृषि पर निर्भर करते हैं । अतएव हम कह सकते हैं कि भारत किसानों का देश है ।" यह दुर्दशा नहीं तो क्या है ? पाठ लेखक के लिए आवश्यक है कि वह ऐसी आवृत्तियों से बचते हुए दूसरों को भी बचाने का प्रयास करें।

निबंध-लेखन में क्या नहीं करना चाहिए के बाद अब क्या करना चाहिए की चर्चा करूँगा ।

अच्छे निबंध के लिए कल्पनाशक्ति की आवश्यकता है । यूँ भी कुछ अच्छा करने के लिए जीवन में कल्पना की जरूरत पड़ती है । कल्पना केवल कलाकारों की चीज नहीं है, विज्ञान के मूल में भी कल्पना ही है । किसी भी चीज को सुंदर और सुरुचिपूर्ण बनाने के लिए कल्पना

से काम लेना अत्यावश्यक हो जाता है । कल्पना अज्ञातलोक का प्रवेशद्वार है । इसका सहारा लेकर एक ही विषय पर हजारों छात्र हजारों प्रकार के निबंध लिख सकते हैं, जबकि "परिचय लाभ-हानि-उपसंहार" वाली पुरातन रीति पर लिखे गए हजार निबंध लगभग एक ही तरह के होते हैं । बिलकुल पिटी-पिटाई लीक । एकदम एक-सी पहुँच और पकड़ । कहीं भी नवीनता या नियंत्रण नहीं । मैंने अभ्यासवर्गों में 'गाय' पर निबंध लिखवाकर छात्रों को परखा है । कॉलेज में आकर भी वे लगभग शतप्रतिशत वही बातें लिखते हैं, जो चौथे-पाँचवें वर्ग में लिखा करते थे—परिचय, आकार-प्रकार, कहाँ-कहाँ पाई जाती है, खान-पान, लाभ, हानि और उपसंहार । लगता है कि गाय तो खूँटे में ही बँधी रह गई, इसके बाहर लिखने वालों की दृष्टि और बुद्धि भी इतने वर्षों में बथान से बाहर नहीं आ पाई । यहीं आवश्यकता पड़ती है कल्पना की, अपने विषय की नवीनता तथा प्रतिपादन को आकर्षक बनाने के लिए । जिनके पास गाय है और जिनके पास गाय नहीं है, जिन्हें गाय खरीदनी है और जिन्हें गाय बेचनी है, जिन्हें आज तक गाय का दूध नहीं मिला अथवा जिन्हें गाय ने कभी पटक दिया था, सभी गाय के बारे में एक ही बात लिखते हैं; जो झूठ भी है और रटी-रटाई भी । कल्पना के द्वारा उस विषय के विभिन्न पक्षों से साक्षात्कार करके, उसकी असंख्य परतों को उकेर करके निबंध को ऐसा बनाया जा सकता है कि उसे चाव के साथ आद्योपांत पढ़ लें । कृषि, कृषक, डेरी फार्म, चर्मोद्योग, संस्कृति, राजनीति, गोशाला, गोरक्षिणी, काँजीघर, चारागाह, दुग्धोत्पादन, मूल्यवृद्धि, सांप्रदायिक सद्भाव, गोपूजा, गोरक्षा और गोपालन जैसे अनेक पक्ष हैं, जिनकी तरफ निगाह जानी चाहिए । गोदान पर तो उपन्यास ही है । गवाक्ष, गवेषणा, गोधूलि, गोचारण आदि शब्द गाय के कारण ही बने हैं । गोबर गैस प्लांट अथवा ईंधन संबंधी समस्याओं को लेकर भी गाय पर निबंध लिख सकते हैं । और तो और, पटने में तो गाय पर बढ़िया निबंध लिखने के लिए कई प्रेरणास्रोत हैं । सड़क की सड़क बथान बनी हुई है । कौन-सी सड़क है, जहाँ गायें साँढ़ की तरह नहीं घूमतीं । कौन ऐसा गोभक्त है, जो दूह लेने के बाद गायों को खुला नहीं छोड़ देता । लोगों के जानमाल की हिफाजत तथा यातायात की सुविधा के लिए पटना के जिलाधीश की हिदायत पिछले सप्ताह आपलोगों ने पढ़ी होगी । 'एक प्याली चाय' पर ही निबंध लिखना है तो इसके विभिन्न पहलुओं से भी कल्पना हमारा परिचय कराएगी । दूध का नहीं होना, चीनी का नहीं मिलना, बिजली नहीं रहने के कारण नल का नहीं खुलना आदि अनेक पहलू हैं । मौसम, मनःस्थिति, पिछला समाचार, सुबह की कोई खबर आदि दूसरा पहलू हैं । एक प्याली चाय यानी भारत का बजट, भारत की आर्थिक अवस्था या भारत की अर्थनीति का पक्का आधार । एक प्याली चाय का मतलब है एक प्याला उत्पाद कर चाय पर, चीनी पर, प्याली पर, पानी पर और लगभग दूध पर भी । चाय उद्योग, चाय मजदूर, चाय व्यवसाय, चाय निर्यात, भारत में चाय के विदेशी उद्योगपति आदि पर भी लिखा जा सकता है । मेहमाननवाजी के लिए आजकल सबसे सस्ता और सुभीता वाला रास्ता है—एक प्याली चाय । कल्पना के द्वारा हम अपरिचित से अपरिचित विषय को भी हृदयंगम कर सकते हैं ।

दूसरा आवश्यक तत्व है व्यक्तिगत अनुभव । कल्पना के द्वारा उस विषय से परिचित होकर उस आधार पर अपने अनुभव गढ़ सकते हैं, जो निबंध को आकर्षक बनाएँगे । निबंध वस्तुनिष्ठ भी होते हैं, लेकिन उनका क्षेत्र दूसरा होता है । छात्र निस्संग होकर जब निबंध लिखते हैं, तो पूरे निबंध में विषय से उनके जुड़ने का भाव ढूँढ़े नहीं मिलता । बिलकुल कटा-कटा सा बर्ताव और चाहिए-चाहिए की रटंत । निबंध को आकर्षक, विश्वासोत्पादक तथा रोचक बनाने के लिए विषय से जुड़ना और जुड़कर अपने अनुभवों का तर्कसंगत ढंग से उल्लेख करना नितांत आवश्यक है । आज निबंध आत्मनिष्ठ होते हैं । वैयक्तिक निबंध को ही आज ललित निबंध कहा जाता है । शास्त्रीय संगीत के गाढ़ेपन को जिस प्रकार थोड़ा घोलकर सुगम संगीत बना दिया गया है, उसी तरह निबंध को भी लोकप्रिय बनाने के लिए उसकी प्राचीन शास्त्रीयता को एक हद तक ढीला करके लालित्य तत्व से मढ़ दिया गया है । डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ० विद्यानिवास मिश्र, आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा, डॉ० कुबेरनाथ राय, डॉ० विवेकी राय आदि अनेक लेखक ललित निबंध के समर्थ और साक्षी हस्ताक्षर हैं । जिसने गाय को अपने घर पर नजदीक से देखा है उसका अनुभव उस आदमी से भिन्न होगा, जिसने गाय को बहुत नजदीक से बीच सड़क पर देखा है । गाँव में नाद पर सानी खाती हुई गाय और शहर में किसी के बगीचे में घुसकर फूल खाती हुई गाय के अनुभव आसानी से रचे जा सकते हैं । उसी तरह चाय की लत लग जाने के बाद किसी खास जगह पर एक प्याली चाय नहीं मिल पाने की छटपटाहट और चाय नहीं पीने वाले उस परिवार की मानसिकता के अनुभव भी बुने जा सकते हैं ।

छात्रजीवन से संबंधित सैंकड़ों समस्याएँ हैं और हम उनका बखान ऊपर-ऊपर से करते हैं । क्यों नहीं, हम उन समस्याओं से जुड़ें, उनमें डूबें और प्राप्त अनुभवों का जिक्र करें ? और यह सब उस पल भी हो सकता है, जब हम निबंध लिखना शुरू करने जा रहे हैं । कल्पना के द्वारा विषय से संबंध स्थापना और फिर अनुभवों का सृजन डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी का निबंध 'नाखून क्यों बढ़ते हैं ?' इस बात का एक उत्कृष्ट उदाहरण है । विषय बिलकुल अनसुना, लेकिन कल्पना और निजी संपर्क के आधार पर प्रतिपादन इतना विश्वसनीय कि पाठक विस्मयविमुग्ध रह जाता है । निबंध छोटा ही है, किंतु उतने में ही मनुष्य की आदिम व्यवस्था से लेकर आज तक की जय-यात्रा का समस्त वृत्तांत तथा सभ्यता के बाद भी मनुष्य के भीतरवाले पशु का बढ़ते नाखूनों के रूप में सिर उठाना हमारे विचारों को झकझोर देता है । सूझबूझ से काम लेने पर हमारे निबंध भी प्रेरणादायी हो सकते हैं ।

यूँ तो कल्पना और व्यक्तिगत अनुभवों के मेल से बढ़िया निबंध लिखे जा सकते हैं, परंतु निबंध को अगर वजनदार बनाना हो तो तीसरा तत्व भी है । विषय से संबंधित आँकड़े, पुस्तकीय ज्ञान, पत्र-पत्रिकाओं की सूचनाएँ तथा विभिन्न लेखों-निबंधों से प्राप्त जानकारियाँ, इन सबों का यथास्थान उल्लेख करके निबंध को विचारपूर्ण बनाया जा सकता है । ध्यान इतना जरूर रखना होगा कि परीक्षा में इस तरह के निबंध बहुत ऊबाऊ अथवा बहुत शोधमुखी न हो जाएँ । डॉ० हजारी

प्रसाद द्विवेदी और डॉ० विद्यानिवास मिश्र के वैयक्तिक निबंध इस कोटि में आते हैं, लेकिन वे कहीं से भी ऊबाऊ प्रतीत नहीं होते ।

निबंध कहाँ से शुरू करें और कहाँ खतम करें, यह भी छात्र पूछते नजर आते हैं । यूँ शुरू तो कहीं से भी किया जा सकता है, उस पंक्ति से भी जिससे खतम करना तय कर लिया है । फिर भी 'प्रारंभ' ऐसा रोचक हो कि पाठक पढ़ने के लिए लालायित हो उठे । प्रारंभिक पंक्तियों में उत्सुकता जगानेवाली क्षमता जरूर होनी चाहिए । 'भारत अब कृषि प्रधान देश नहीं है', 'मैं अपनी गाय बेचना चाहता हूँ', 'एक प्याली चाय की कीमत अब चार रुपए हो जाएगी', 'कल से चाय पीना-पिलाना बंद' आदि कुछ नमूने हैं, जिनसे विषय में प्रवेश करने के लिए द्वार खोला जा सकता है । अंत करना तो बहुत आसान है । जहाँ लगे कि अब मेरे पास कहने को कुछ नहीं है, बस वहीं और उसी क्षण लिखना बंद कर दें । कोई मोह-ममता नहीं, कोई 'एतदर्थ, अर्थात्' नहीं । निबंध का स्वाभाविक अंत सर्वोत्तम होता है ।

अंत में भाषा संबंधी कुछ बातें । पाठ लेखक का कर्त्तव्य है कि वह छात्र को सही भाषा प्रयोग संबंधी उदाहरण अपने लेखन के जरिए ही दें, क्योंकि एक अवस्था तक छात्रों की धारणा रहती है कि हिंदी जितनी अलंकृत और अस्वाभाविक होगी, अंक उतने ही अधिक मिलेंगे । भाषा सहज हो । लिखने के समय भी वह उतनी ही सहज रहे, जितनी सोचने के समय रहती है । बीच-बीच में मोहवश ऐसे शब्द न खोंसें, जिन्हें निर्ममतापूर्वक दूसरा आदमी उखाड़ या नोंच दे । वाक्य छोटे हों । बड़े-बड़े वाक्य तभी लिखें, जब भाषा की गति को सँभालने और नियंत्रित करने के गुण आ जाये । भाषा पर अधिकार हो जाने के उपरांत तो हम जैसा चाहें, वैसा लिख सकते हैं, लेकिन अपने पाठक का ध्यान तब भी उसे रखना होगा । निबंध को सुरुचिपूर्ण बनाने की दिशा में भाषा के महत्त्व को बराबर ध्यान में रखना होगा, तभी मिहनत सार्थक होगी ।

◆ ◆ ◆

अभ्यास

पाठ के साथ

1. निबंध-लेखन का मूल उद्देश्य क्या है ?
2. निबंध-लेखन के समय किन बातों का ध्यान रखना जरूरी होता है ?
3. लेखक ने निबंध की क्या परिभाषा दी है ?
4. निबंध-लेखन में लेखक किस अत्याचार की बात करता है, जिससे हिंदी निबंध बोझिल, नीरस और ऊबाऊ हो जाता है ?
5. निबंध-लेखन में हिंदीतर भाषाओं के उद्धरण में किस बात का ध्यान रखना आवश्यक होता है ?

6. अच्छे निबंध के लिए क्या आवश्यक है ? विस्तार से तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए ।
7. निबंध-लेखन की क्या प्रक्रिया बताई गई है ? पाठ के आधार पर बताएँ ।
8. निबंध के कितने प्रकार होते हैं ? भेदों के साथ उनकी परिभाषा भी दें ।
9. निबंध-लेखन के अभ्यास से छात्र किन समस्याओं से निजात पा सकता है ?
10. निबंध-लेखन में कल्पना का क्या महत्त्व है ?
11. आचार्य शुक्ल के निबंध किस कोटि में आते हैं और क्यों ?
12. ललित निबंध की क्या विशेषता होती है ?
13. निबंध को सुरुचिपूर्ण बनाने की दिशा में भाषा के महत्त्व पर प्रकाश डालें ।

पाठ के आस-पास

1. निबंध लेखक ने कुछ उत्कृष्ट निबंधकारों, जैसे – हजारी प्रसाद द्विवेदी, विद्यानिवास मिश्र, आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा, डॉ॰ विवेकी राय इत्यादि का हवाला दिया है। ये सभी ललित निबंध के समर्थ हस्ताक्षर हैं। अपने पुस्तकालय से इन निबंधकारों के निबंध उपलब्ध कर पढ़ें।
2. लेखक ने निबंध लिखने के क्रम में निबंध के बहुत सारे विषय सुझाए हैं । अपनी इच्छानुसार उनमें से किसी दो विषय पर निबंध लिखकर अपने शिक्षक को दिखलाइए ।

भाषा की बात

1. **संधि-विच्छेद करें –**
   संभावना, अत्याचार, अत्यावश्यक, दुग्धोत्पादन, संस्कृति, सद्भाव, विश्वविद्यालय
2. **निम्नलिखित शब्दों से विशेषण बनाइए –**
   प्रतिभा, ज्ञान, रचना, संसार, प्रमाण, आनंद
3. **उद्‌गम की दृष्टि से शब्दों को चुनिए –**
   फिजिक्स, उलजलूल, ऊटपटांग, गालिब, बेवकूफी, कृषक, संस्कृति
4. भानुमति का पिटारा, रोब गालिब करना मुहावरों का अर्थ वाक्य-प्रयोग द्वारा स्पष्ट करें ।

शब्द निधि

अस्पृश्य : न छूने योग्य, अछूत
भ्रांत धारणा : गलत धारणा
निर्मूल : जड़विहीन, जिसका मूल न हो
आकस्मिक : अचानक
स्पर्द्धावश : प्रतियोगितावश
प्रतिपादन : निष्कर्षात्मक विवेचन
पल्लवन : बढ़ा-चढ़ा कर
अक्षुण्ण : जिसका क्षरण न हो
उपसंहार : ऊपर कही गई बातों को निष्कर्ष रूप में रखना
निस्संग : बिना संग-साथ के
आत्मनिष्ठ : अपने में निष्ठ, अपने में एकाग्र
विस्मयविमुग्ध : आश्चर्यचकित
शोधमुखी : शोध की ओर उन्मुख
एतदर्थ : इस प्रकार